Date – 17 June 2022

भारत गौरव योजना

- भारत गौरव योजना के तहत कोयंबटूर से भारत की पहली निजी ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया है।
- ट्रेन मार्ग में कई ऐतिहासिक स्थलों को कवर करेगी, जिससे यात्रियों को देश की सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानकारी मिलेगी।

भारत गौरव योजना:

- नवंबर 2021 में शुरू की गई इस योजना के तहत अब ट्रेनों में पर्यटन के लिए तीसरा खंड स्थापित किया जाएगा। अब तक रेलवे में एक यात्री खंड और एक माल खंड था।

- ये नियमित ट्रेनें नहीं हैं जो एक समय सारिणी के अनुसार चलेंगी बल्कि आईआरसीटीसी द्वारा संचालित रामायण एक्सप्रेस की तर्ज पर संचालित की जाएंगी।
- थीम आधारित टूरिस्ट सर्किट ट्रेनों के तहत इसकी घोषणा की गई। इन ट्रेनों को एक थीम आधारित सर्किट में निजी भागीदारों और आईआरसीटीसी दोनों द्वारा चलाया जाएगा।
- थीम आधारित पर्यटन (सर्किट) से रेलवे का मतलब गुरु कृपा जैसी उन ट्रेनों से है जो गुरु नानक से संबंधित सभी स्थानों पर संचालित होती हैं या रामायण थीम वाली ट्रेनों का संचालन भगवान राम से संबंधित स्थानों के लिए किया जाता है।
- कोई भी इन ट्रेनों के अधिग्रहण के लिए सोसायटियों, ट्रस्टों, संघों और यहां तक कि राज्य सरकारों को आवेदन कर सकता है और उन्हें थीम आधारित विशेष पर्यटक सर्किट पर संचालित किया जा सकता है।
- सेवा प्रदाता पर्यटकों को ट्रेन यात्रा, होटल/विश्राम स्थल, दर्शनीय स्थलों की व्यवस्था, ऐतिहासिक/विरासत दर्शनीय स्थलों की यात्रा, टूर गाइड आदि सहित सभी समावेशी पैकेज प्रदान करेगा।

योजना के लाभ:

- ये ट्रेनें भारत और दुनिया के लोगों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और भव्य ऐतिहासिक स्थलों के सपने को साकार करने में मदद करेंगी।
- यह भारत की विशाल पर्यटन क्षमता के दोहन में भी मदद करेगा।

अन्य संबंधित योजनाएं:

स्वदेश दर्शन योजना

- स्वदेश दर्शन, देश में थीम आधारित पर्यटन सर्किट के एकीकृत विकास के लिए वर्ष 2014-15 में एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना शुरू की गई थी।

प्रसाद योजना:

- चिन्हित तीर्थ स्थलों के समग्र विकास के उद्देश्य से पर्यटन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2014-15 में 'तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्धन अभियान पर राष्ट्रीय मिशन' (प्रसाद) शुरू किया गया था।

बौद्ध सम्मेलन:

- यह भारत को एक बौद्ध गंतव्य और दुनिया भर के प्रमुख बाजारों के रूप में बढ़ावा देने के उद्देश्य से हर वैकल्पिक वर्ष में आयोजित किया जाता है।

देखो अपना देश पहल:

- यह नागरिकों को देश के भीतर व्यापक रूप से यात्रा करने और देश में पर्यटन स्थलों में घरेलू पर्यटन सुविधाओं और बुनियादी ढांचे के विकास को सक्षम करने के लिए भारत की अनूठी चीजों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करने की एक पहल है।

भारत में पर्यटन की स्थिति:

- भारत में पर्यटन देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है और तेजी से बढ़ रहा है।
- विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद के अनुसार, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में यात्रा और पर्यटन उद्योग का योगदान 2020 में 9 अरब अमेरिकी डॉलर था और वर्ष 2028 तक 512 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।
- भारत में, सकल घरेलू उत्पाद में उद्योग के प्रत्यक्ष योगदान से 2019 और 2028 के बीच 35% की वार्षिक वृद्धि दर दर्ज करने की उम्मीद है।
- साथ ही, यात्रा और पर्यटन प्रतिस्पर्धात्मकता रिपोर्ट 2019 ने भारत को कुल 140 देशों में 34वां स्थान दिया, जो इस क्षेत्र में सुधार के लिए भारत के प्रयासों को दर्शाता है।

स्वदीप कुमार

मिसाइल पृथ्वी-II

- हाल ही में भारत ने रात में सतह से सतह पर मार करने में सक्षम कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल, पृथ्वी-द्वितीय का सफल परीक्षण किया।
- इससे पहले, मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि- IV का परीक्षण किया गया था, जिसे 4,000 किमी लंबी दूरी तय की जा सकती थी।

पृथ्वी-द्वितीय मिसाइल की मुख्य विशेषताएं:

- पृथ्वी-II एक स्वदेश में विकसित सतह से सतह पर मार करने वाली कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल (SRBM) है जिसकी मारक क्षमता लगभग 250-350 किमी है और यह एक टन पेलोड ले जा सकता है।
- पृथ्वी-द्वितीय श्रेणी एक एकल-चरण तरल-ईंधन वाली मिसाइल है, जिसकी मारक क्षमता 500-1000 किलोग्राम है।
- यह मिसाइल प्रणाली उच्च स्तर की सटीकता के साथ लक्ष्य को भेदने में सक्षम है।
- अत्याधुनिक मिसाइल अपने लक्ष्य को भेदने के लिए कुशल प्रक्षेपवक्र के साथ एक उन्नत जड़त्वीय मार्गदर्शन प्रणाली का उपयोग करती है।
- इसे शुरू में भारतीय वायु सेना के लिए प्राथमिक उपयोगकर्ता के रूप में विकसित किया गया था और बाद में इसे भारतीय सेना में भी शामिल किया गया था।

- जबकि मिसाइल को पहली बार 2003 में भारत के सामरिक बल कमान में शामिल किया गया था, यह आईजीएमडीपी के तहत विकसित पहली मिसाइल थी।

निर्माण:

- भारत के रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) के एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) के तहत।

पृथ्वी मिसाइल:

- पृथ्वी मिसाइल प्रणाली में सतह से सतह पर मार करने वाली विभिन्न सामरिक कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें (SRBMs) शामिल हैं।
- इसका विकास वर्ष 1983 में शुरू हुआ और यह भारत की पहली स्वदेशी बैलिस्टिक मिसाइल थी।
- इसका पहला परीक्षण वर्ष 1988 में शार सेंटर, श्रीहरिकोटा से किया गया था।
- इसकी सीमा 150-300 किमी है।
- पृथ्वी I और पृथ्वी III श्रेणी की मिसाइलों के नौसैनिक संस्करण का कोड-नाम धनुष है।
- प्रणोदन तकनीक सोवियत एसए-2 सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल पर आधारित थी।

सोवियत SA-2 सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल:

- 1950 के दशक के मध्य में विकसित सोवियत एसए-2 सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल सोवियत संघ की पहली प्रभावी सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल थी।
- इसे युद्धक्षेत्र मिसाइल के लिए प्राथमिक परमाणु हथियार के रूप में डिजाइन किया गया था जो परमाणु हथियार ले जा सकता था।
- पृथ्वी I मिसाइल 1994 से भारतीय सेना में सेवा दे रही है।

- कथित तौर पर, प्रहार मिसाइलों को पृथ्वी I मिसाइलों से बदला जा रहा है।
- पृथ्वी II मिसाइलें 1996 से सेवा में हैं।
- 350 कि.मी. K की अधिक विस्तारित रेंज के साथ पृथ्वी III का वर्ष 2004 में सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया था।

एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP):

- IGMDP मिसाइलों की एक विस्तृत श्रृंखला के अनुसंधान और विकास के लिए भारतीय रक्षा मंत्रालय का एक कार्यक्रम था।
- परियोजना की शुरुआत वर्ष 1982-1983 में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के नेतृत्व में हुई थी
- इस कार्यक्रम ने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को भारत का मिसाइल मैन बनाया।
- एकीकृत निर्देशित मिसाइल कार्यक्रम वर्ष 2008 में पूरा किया गया था।

IGMDP के तहत विकसित पांच मिसाइलें:

- इस कार्यक्रम के तहत विकसित 5 मिसाइलें (P-A-T-N-A) हैं:
- **पृथ्वी:** कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल जो सतह से सतह पर हमले करने में सक्षम है।
- **अग्नि:** एक मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल जो सतह से सतह पर हमला करने में सक्षम है, यानी अग्नि (1, 2, 3, 4, 5)।
- **त्रिशूल:** कम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल।
- **नाग:** तीसरी पीढ़ी की टैंक रोधी मिसाइल।
- **आकाश:** मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल।

स्वदीप कुमार

हस्तशिल्प और एक जिला एक उत्पाद योजना

- हाल ही में कपड़ा मंत्रालय ने राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली में 'लोटा शॉप' का उद्घाटन किया।
- यह दुकान सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (सीसीआईसी) द्वारा खोली गई थी, जिसे सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज एम्पोरियम के नाम से जाना जाता है।
- यह भारत के पारंपरिक शिल्प रूपों के आधार पर बेहतरीन हस्तशिल्प, स्मृति चिन्ह, हस्तशिल्प और वस्त्र प्रदर्शित करता है।
- सरकार ने यह भी दोहराया कि वह 'एक जिला एक उत्पाद' की दिशा में काम कर रही है जो हस्तशिल्प क्षेत्र के साथ-साथ कारीगरों को भी प्रोत्साहन देगा।

एक जिला एक उत्पाद:

- 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' (ओडीओपी) खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया था ताकि जिलों को उनकी पूरी क्षमता का उपभोग करने, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करने में सक्षम बनाया जा सके।
- इसे उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जनवरी, 2018 में लॉन्च किया गया था, और बाद में इसकी सफलता के कारण केंद्र सरकार द्वारा अपनाया गया।

- यह पहल विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी), वाणिज्य विभाग द्वारा 'जिले के रूप में निर्यात हब' पहल के साथ की गई है।
- 'निर्यात हब के रूप में जिले' पहल जिला स्तर के उद्योगों को लघु उद्योगों की मदद करने और स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करती है।

उद्देश्य:

- इसका उद्देश्य किसी जिले के उत्पाद की पहचान, प्रचार और ब्रांडिंग करना है।
- उस उत्पाद के प्रचार के माध्यम से भारत के प्रत्येक जिले को निर्यात हब में बदलना जिसमें जिला विशेषज्ञता रखता है।
- यह विनिर्माण को बढ़ावा देकर, स्थानीय व्यवसायों का समर्थन करके, संभावित विदेशी ग्राहकों का पता लगाकर और इसी तरह इसे पूरा करने की कल्पना करता है, इसलिए 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण को प्राप्त करने में मदद करता है।

भारत में हस्तशिल्प क्षेत्र की स्थिति:

- हस्तशिल्प वे सामान हैं जो उत्पादन विधियों और उपकरणों के बजाय सरल उपकरणों का उपयोग करके बड़े पैमाने पर निर्मित होते हैं। जबकि बुनियादी कला और शिल्प के समान, हस्तशिल्प के साथ एक महत्वपूर्ण अंतर है।
- विभिन्न प्रयासों के परिणामस्वरूप उत्पादित इन वस्तुओं को एक विशिष्ट कार्य या उपयोग के साथ-साथ प्रकृति की सुंदरता को बनाए रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- हथकरघा और हस्तशिल्प उद्योग दशकों से भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहा है।

- भारत लकड़ी के बर्तन, धातु के सामान, हाथ से मुद्रित वस्त्र, कढ़ाई के सामान, जरी के सामान, नकली आभूषण, मूर्तियाँ, मिट्टी के बर्तन, कांच के बने पदार्थ, अत्तर, अगरबत्ती आदि का उत्पादन करता है।

व्यवसाय:

- भारत हस्तशिल्प निर्यात करने वाले सबसे बड़े देशों में से एक है।
- मार्च 2022 में, हस्तनिर्मित कालीनों को छोड़कर भारत से कुल हस्तशिल्प निर्यात 26 मिलियन अमेरिकी डॉलर रहा, जो फरवरी 2022 की तुलना में 8% अधिक है। वर्ष 2021-22 के दौरान भारतीय हस्तशिल्प का कुल निर्यात 4.35 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। पिछले वर्ष की तुलना में 25.7 प्रतिशत की वृद्धि।

इस क्षेत्र का महत्व:

सबसे बड़ा नियोक्ता:

- यह कृषि के बाद सबसे बड़े रोजगार सृजनकर्ताओं में से एक है, जो देश की ग्रामीण और शहरी आबादी को आजीविका का एक प्रमुख साधन प्रदान करता है।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में हस्तशिल्प सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है, जिसमें सात मिलियन से अधिक लोग कार्यरत हैं।

पर्यावरण के अनुकूल:

- यह क्षेत्र एक आत्मनिर्भर व्यापार मॉडल पर काम करता है, जिसमें शिल्पकार अक्सर अपने स्वयं के कच्चे माल का उत्पादन करते हैं और पर्यावरण के अनुकूल शून्य-अपशिष्ट प्रथाओं के अग्रदूत के रूप में जाने जाते हैं।

चुनौतियां:

- कारीगरों को धन की अनुपलब्धता, प्रौद्योगिकी तक कम पहुंच, बाजार ज्ञान की कमी और विकास के लिए खराब संस्थागत ढांचे जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

- इसके अलावा, यह क्षेत्र हस्तनिर्मित उत्पादों में अंतर्निहित अंतर्विरोधों से ग्रस्त है, जो आम तौर पर उत्पादन के पैमाने के विपरीत होते हैं।

इस क्षेत्र के विकास का समर्थन करने वाले कारक:

सरकारी योजनाएं:

- केंद्र सरकार अपनी क्षमता को अधिकतम करने के लिए उद्योग को विकसित करने की दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रही है।
- कई योजनाओं और पहलों को शुरू करने से शिल्पकारों को उनके सामने आने वाली चुनौतियों से पार पाने में मदद मिल रही है।

इस क्षेत्र के विकास का समर्थन करने वाले कारक:

सरकारी योजनाएं:

- केंद्र सरकार अपनी क्षमता को अधिकतम करने के लिए उद्योग को विकसित करने की दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रही है।
- कई योजनाओं और पहलों को शुरू करने से शिल्पकारों को उनके सामने आने वाली चुनौतियों से पार पाने में मदद मिल रही है।

समावेशन के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना:

- तकनीक जो सीमाओं को पार करने में मदद कर सकती है, हस्तशिल्प उद्योग के लिए वरदान साबित हुई है।
- ई-कॉमर्स ने उपभोक्ता वस्तुओं तक निर्बाध पहुंच के दरवाजे खोल दिए हैं और समावेशी विकास को सक्षम बनाया है क्योंकि दुनिया के किसी भी हिस्से में सभी निर्माता इन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने उत्पादों का प्रदर्शन कर सकते हैं।
- यहां तक कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म भी भारतीय हस्तशिल्प के विश्व स्तर पर विपणन में बहुत मदद कर रहे हैं।

निर्यात बनाम आयात:

- पिछले पांच वर्षों में, भारतीय हस्तशिल्प के निर्यात में 40% से अधिक की वृद्धि हुई है, क्योंकि हस्तशिल्प का तीन-चौथाई निर्यात किया जाता है।
- भारतीय हस्तशिल्प मुख्य रूप से सौ से अधिक देशों को निर्यात किए जाते हैं और अकेले अमेरिका भारत के हस्तशिल्प निर्यात का लगभग एक तिहाई आयात करता है।

कारीगरों के व्यवहार में परिवर्तन:

- आय में वृद्धि के रूप में कारीगर बाजार की नई मांगों को पूरा करने वाले उत्पादों को बनाने के लिए नए कौशल के अनुकूल होते हैं।
- इस प्रकार, प्रौद्योगिकी की शुरुआत और इसके आसान उपयोग के कारण, हस्तशिल्प के विक्रेताओं और खरीदारों के व्यवहार में महत्वपूर्ण बदलाव आया है।

संबंधित सरकारी पहल:

अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना:

- कारीगरों को उनके बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकी और मानव संसाधन विकास की जरूरतों के साथ समर्थन देना।
- योजना का उद्देश्य कच्चे माल की खरीद में थोक उत्पादन और अर्थव्यवस्था को सुविधाजनक बनाने के एजेंडे के साथ कारीगरों को स्वयं सहायता समूहों और समाजों में संगठित करना है।

मेगा क्लस्टर योजना:

- योजना के उद्देश्य में रोजगार सृजन और कारीगरों के जीवन स्तर में सुधार शामिल है।
- कार्यक्रम विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में हस्तशिल्प केंद्रों में बुनियादी ढांचे और उत्पादन श्रृंखला को बढ़ाने में क्लस्टर-आधारित दृष्टिकोण का अनुसरण करता है।

विपणन सहायता और सेवा योजना:

- योजना कारीगरों को घरेलू विपणन कार्यक्रमों के लिए वित्तीय सहायता के रूप में हस्तक्षेप प्रदान करती है जो उन्हें देश और विदेश में व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों के आयोजन और भाग लेने में मदद करती है।

अनुसंधान और विकास योजना:

- उपरोक्त योजनाओं के क्रियान्वयन में सहयोग देने के उद्देश्य से इस क्षेत्र में शिल्प और कारीगरों के आर्थिक, सामाजिक, सौंदर्य और प्रचार संबंधी पहलुओं पर प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए पहल शुरू की गई थी।

राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम:

- इस कार्यक्रम के महत्वपूर्ण घटक सर्वेक्षण, डिजाइन और प्रौद्योगिकी का उन्नयन, मानव संसाधन का विकास, कारीगरों को बीमा और ऋण सुविधाएं प्रदान करना, अनुसंधान एवं विकास, बुनियादी ढांचा विकास और विपणन सहायता गतिविधियां हैं।

व्यापक हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना:

- इस योजना का विजन हस्तशिल्प समूहों में बुनियादी ढांचे और उत्पादन श्रृंखला को बढ़ाना है। इसके अलावा, योजना का उद्देश्य उत्पादन, मूल्यवर्धन और गुणवत्ता आश्वासन के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचा प्रदान करना है।

हस्तशिल्प के लिए निर्यात संवर्धन परिषद:

- परिषद का मुख्य उद्देश्य हस्तशिल्प के निर्यात को बढ़ावा देना, समर्थन, सुरक्षा, रखरखाव और वृद्धि करना है।
- परिषद की अन्य गतिविधियों में ज्ञान का प्रसार, सदस्यों को पेशेवर सलाह और सहायता प्रदान करना, प्रतिनिधिमंडल के दौरे और मेलों का आयोजन, निर्यातकों और सरकार के बीच संपर्क प्रदान करना और जागरूकता कार्यशालाएं आयोजित करना शामिल है।

स्वदीप कुमार